रिकार्ड:- नयन हीन को राह.... ओम शान्ति प्रातःक्लास 21-5-67

यह सब गीत आदि भक्ति मार्ग के। तुम्हारे लिये कोई गीतों की दरकार नही है। कोई तकलीफ की बात नही। भक्ति मार्ग मे तो तकलीफ बहुत है ना। कितने रस्म रिवाज चलते है। ब्राह्मण खिलाना यह करना तीर्थों आद पर जाना, बहुत कुछ करना होता है। यहाँ बाप आकर सब तकलीफो से छुड़वा देते है। इससे कुछ भी करना नही है। मुख से शिव-2 बोलना भी नही है। यह भी कायदा नही है। इसस कोई फल नही मिलेगा। बाप कहते है कि यह अन्दर मे समझना है कि मै आत्मा हूँ। बाप ने कहा है कि हमको याद करो। अन्तर्मुख होकर बाप को ही याद करना है। तो बाप प्रतिज्ञा करते है कि तुम्हारे पाप भस्म हो जावेगें। यह है योगाग्नी जिससे तुम्हारे सारे पाप दग्ध हो जावेगें। फिर तुम वापस चले जावेंगे। हिस्ट्री रिपीट होनी है। यह सब अपने साथ बाते करने की युक्तियां है। अपने ही साथ रूह-रिहान करते रहो। बाप कहते है कि मै कल्प-2 तुमको यह युक्ति बताता हूँ। यह भी जानते हो कि धीरे-2 यह झाड़ वृधी को पावेगा। माया का तूफान भी इसी समय है जबकि मैआकर तुमको माया के इन बन्धनो से छुड़वाता हूँ। सतयुग मे कोई बन्धन होता नही है। यह पुरुषोतम संगम युग भी अभी तुम अर्थ सहित बुधी मे है। यहाँ पर हर बात अर्थ सहत ही है। बाकी सब है अनर्थ। देहअभिमानी बात जो करेंगे वो अनर्थ। देहीअभिमानी अर्थ सहित बात करेंगे। उससे फल मिलेगा। अब भक्ति मार्ग मे कितनी डिफीकल्टी होती है। समझते है कि तीर्थ यात्रा करना यहसब करना यह सब भगवान तक पहुचने के रास्ते है। परन्तु बच्चो ने अब समझा है कि वापस कोई एक भी नही जा सकते। पहले नम्बर मे जो विश्व के मालिक थे, उनको ही 84जन्म बता दिये है तो बाकी दुसरे फिर छूट ही कैसे सकते है। सबचक्र मे आते है तो फिर कृष्ण के लिये कैसे कहेंगे। कि वो सदैव कायम है ही है। हो कृष्ण का नाम रूप तो चला गया बाकी आत्मा तो है ही है। किसी न किसी रूप मे। यह सब बाते बच्चो को बाप ने आकर समझाई है। यह पढाई है। स्टुडेन्ट लाईफ पर पुरा ध्यान देना है। रोजाना समय फिक्स करना है अपना चार्ट लिखने का। व्यापारी लोगो को बहुत बन्धन रहता है। नोकरी करने वालों पर बन्धन नही रहता। उन्होने तो अपना कार्य पुरा किया तो खलास। व्यापारी लोगो के पास तो कब भी ग्राहक आवे तो सपलाई करना पड़ेगा। बुधी योग बाहर जाता है। तो बच्चे को कोशिश समय निकालना चाहिये। अमृत वेले का समय अच्छा है। उस समय बाहर के विचारो को लाकप कर देना चाहिये। (ताला लगा देना चाहिये) कोई भी ख्याल नही आवे। बाप की है बाप की महिमा लिख देनी चाहिये, बाबा ज्ञान का सागर है। पतितपावन है। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते है। उनकी है श्रीमत पर चलना है। सभी से अच्छी मत मिलतीहै मनमनाभव। दुसरा कोई तो ऐसे बोल नही सके। कल्प-2 यह मत मिलती है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की बाप तो सिर्फ कहते है कि मामेकम् याद करो। इसको कहा जाता है वशीकरण मन्त्र। अर्थ सहित याद करने से ही खुशी होगी। बाप कहते है कि अव्यभचारी याद चाहीये। जैसे अव्यभचारी भक्ति है ही एक शिव की पुजा। फिर व्यभचारी होने कारण अनेको की भक्ति करते है। असल भी अदवैत भक्ति। एक की भक्ति करना। सो ही ज्ञान भी अब एक का ही सुनना है। जिनको भक्ति मे याद करते है। वो खुद भी आकर समझाते है। मीठे-2 बच्चो भक्ति का पार्ट भी चलना ही है। पहले-2 एक शिव की ही तुम मन्दिर बनाते हो। जब अव्यभचारी भक्ति होती है तो तुम सुखी होते हो। फिर व्यभचारी होने से दवैत मे आने पर थोडा दुःख भासता है। एक बाप ही तो सबको सुख देने वाला है ना। बाप कहते हैकि मै आकर तुम बच्चो को मन्त्र देता हूँ। मन्त्र भी एक का ही सुनो। यही देहधारी भी नही है। इसमे मोटी मत। पक्का कर लो। एक शिव बाबा को ही याद करना है। शिव बाबा को आना भी है जरूर। और कोई शरीर तो ले नही सकते। यहाँ पर तुम आते ही हो बाप दादा के

21.5.67

शिव बाबा से ऊँच तो कोई है नही। याद भी सभी उनको ही करते है। भारत ही स्वर्ग था ना। लक्ष्मी नारायण का राज्य था। उनको ऐसा किसने बनाया?जिनकी ही तुम पूजा करते हो। यह किसीको भी पता नही है कि महालक्ष्मी कौन है। महालक्ष्मी का अगला जन्म क्या था यह भी कोई नही जानते है। तुम जानते हो कि जगतअम्बा है तो तुम माताओं को ही जगतअम्बा कहा जाता है। भारत माता कोई एक का ही नाम नही है। तुम सब शिव से ही शक्ति लेती हो। योगबल से। शक्ति लेने मे ही माया इन्टरफेर करती है। युद्ध मे तो ऊंगली लगती है ना तो बहादुर होकर लड़ना चाहिये। ऐसे नही कि कोई ने उंगली ही लगाई और तुम फिस पड़ो। यहां है ही माया से युद्ध। बाकी कोई कौरवों और पाण्डवों की युद्ध है नहीं। उनकी तो यवनों से युद्ध है। मनुष्य जब लड़ते है तो एक दो गज जमीन कारण भी गला काट देते है। बाप आकर समझाते है कि यह सब ड्रामा बना हुआ है। राम राज्य और रावण राज्य। अभी तुम बच्चों को यह ज्ञान है कि हम राम राज्य मे जा रहे है।वहाँ परअथाह सुख है। नाम ही है सुखधाम। वहाँ पर दुःख का नाम निशान नही होता।अब जबकि बाप आये है बच्चों को ऐसी राजाई देते है तो बच्चों को कितना पुरुषार्थ करना चाहिये। बार-2 कहता हूँ कि बच्चों को थको नही। शिव बाबा को याद करते रहो।वो भी बिन्दी है। हम आत्मा भी बिन्दी है। यहाँ पर पार्ट बजाने आये है। अब पार्ट पूरा होता है। अब बाप कहते है कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। विकर्म आत्मा पर ही चढ़ते है।शरीर तो यहाँ ही खत्म हो जावेगा। कोई मनुष्य कोई पाप करते है तो अपने शरीर को ही खत्म कर लेते है। परन्तु इससे कोई पाप उतरता नही है।पापात्मा कहा जाता है। साधु सन्त आदतो कह देते है कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा सो परमात्मा। अनेक प्रकार के मतमतान्तर है। जो भी घर से रूठते है वो जाकर आपस मे कोई ना कोई मठ बना लेते है। अभी पिछाड़ी बाकी थोड़ी सब जैसे कि अंधे है। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा ही सब कुछ जानती है। आगे ईश्वर के बारे मे कुछ भी नही जानते थे। सृष्टी चक्र कैसे फिरता है यह कुछ भी नही जानते थे। अभी आत्मा सब कुछ जानती है। कितनी छोटी आत्मा है। पहले-2 आत्मा की रियलाईजेशन करवानी होती है। आत्मा बहुत सूक्ष्म है। उनका सा० होता जैसे कि सफेद सितारा होता है। परन्तु उससे मनुष्य कुछ भी समझ नही सकते। वो सब है भक्ति मार्ग की बातें। ज्ञान मार्ग की बातें बाप ही समझाते है। वो भी भृकुटी के बीच मे ही आकरबैठते है बाजू मे। यह भी झट समझ लेते है। यह सब है नई बाते। जो तो बाप ही बैठ कर समझाते है। यह पक्का याद कर लो। भूलो नही। बाबा को जितना याद करेंगे उतने ही विकर्म विनाश होंगे।विकर्म विनाश होने पर ही आधार तुम्हारे भविष्य के पद का।

यह भी ठीक जानते है कि भारत ही वो सौभाग्यशाली खण्ड है जहाँ पर बाप आते है। भारत ही हैवन था। जिसको ही गार्डन आफ फ्लावर कहते है। तुम अभी प्रैक्टीकल मे जानते हो।तुम पढ़ते ही हो वहां जाने के लिये। सा० भी करते हो जानते हो कि बरोबर यह वो ही महाभारत लड़ाई है। फिर ऐसी लड़ाई कब लगनी नही है। यह है अन्तिम। तुम बच्चों के लिये नई दुनियाँ भी जरूर चाहिये। नई दुनियाँ थी ना।भारत स्वर्ग था 5000वर्ष हुआ है। लाखों वर्ष की तो बात ही नही है। लाखों वर्ष अगर होते तो मनुष्य कितने अनगिनत हो जाते। यह भी कोई की बुद्धि मे नही बैठता है कि इतने हो कैसे सकते है। जबकि इतनी आदमशुमारी ही नहीं है। अब तुम समझते हो कि आज से 5000 वर्ष पहले विश्व पर हम राज्य करते थे।औरकोई खण्ड नही था।वो होते ही है बाद मे। तुम बच्चों की बुद्धि मे यह सब बाते है। और किसीकी बुद्धि मे बिलकुल ही नही है। थोड़ा भी इशारा दो तो समझा जावे कि बात तो बरोबर है। हमारे पहले भी जरूर कोई धर्म था। अब तुम समझा सकते हो कि एक ही आदी सनातन दैवी देवता धर्म जो था वो ही प्रायःलोप हो गया है। सृष्टी पुरानी हो गई कोई भी अपने को देवता धर्म का कह नही सकते है। समझते ही नही कि हम आदी सनातन देवी